अथाथर्वनिधेस्तस्य विजितारिपुरः पुरः।

अर्थ्यामर्थपतिर्वाचमाददे वदतां वरः ।।59।।

अन्वय अथ विजितारिपुरः वदतां वरः अर्थपतिः अथर्वनिधेः तस्य पुरः अर्थ्या वाचमाददे।

अनुवाद (वशिष्ठ जी के कुशल पूछने के) अनन्तर शत्रुओं के नगरों को जीतने वाले, वक्ताओं में श्रेष्ठ, धन के स्वामी राजा दिलीप ने अथर्ववेद की विद्या के ज्ञाता वशिष्ठ के सामने इस प्रकार सार्थक वचन कहे।

टिप्पणियाँ

अथर्वनिधेः अथर्वणः निधिः, तस्य (षष्ठी तत्पुरुष)। अथर्व विद्या के ज्ञाता।

विशेष अथर्ववेद का पूरा तथा ठीक नाम है.'अथर्वाङ्गिरस', पुरोहितों तथा ऋषियों के प्राचीन दो कुल प्रसिद्ध थे जिनके नाम थे (1) अथर्वन्, (2) आङ्गिरस। ब्लूमफील्ड नाम विदेशी विद्वान् के मत में 'अथर्वन्' नाम पाप की नाशक, शांतिदायक, पौष्टिक आदि मंगलकारी विधियों के अर्थ में प्रयुक्त था जबकि 'आङ्गिरस' नाम ऐसे जादू के मन्त्रों का सूचक था जिनका प्रयोग मारण-उच्चाटन आदि अनिष्ट एवं हानिकारक अशुभ कार्यों के लिए किया जाता था। इस प्रकार अथर्ववेद में दो प्रकार के मन्त्र थे, शुभ कार्यों के लिए प्रयोग किए जाने वाले मन्त्र जिन्हें 'अथर्वविद्या' कहा जाता था तथा अशुभ कार्यों के जादू टोना करने वाले मन्त्र जिन्हें 'आङ्गिरस' कहा जाता था। अथर्वविद्या उत्तम तथा आङ्गिरस हीन कोटि की मानी जाती थी। राजा के पुरोहित के लिए दोनों विद्याओं का ज्ञान आवश्यक था। इनकी सहायता से वह राजा के अनिष्ट का

निवारण कर उसकी रक्षा करता था। भाव यह है कि पुरोहित होने के कारण वशिष्ठ अथर्ववविद्या में प्रवीण थे। इसी कारण पुत्र के न होने पर राजा-रानी वशिष्ठ ऋषि के पास पुत्रप्राप्ति का उपाय जानने के लिए आए।

विजितारिपुरः अरीणां पुराणि, अरिपुराणि (षष्ठी तत्पुरुष), विजितानि अरिपुराणि येन सः (बहुव्रीहि) राजा का विशेषण। जिसने अपने शत्रुओं के नगरों (राजधानियों) को जीत लिया था। शत्रुओं के विजेता, राजा दिलीप। शत्रुजित्।

अर्थ्याम् (वाचम्).अर्थात् अनपेताम्, अर्थोपेताम् (अर्थयत्), सार्थक, विशिष्ट अर्थ से परिपूर्ण।

देखिए.''स सौष्ठवौदार्यविशेषाशालिनी विनिश्चतार्थमिति वाचमाददे।'' (किरातार्जुनीयम्, प्रथम सर्ग)।

वदतां वरः. वक्ताओं में श्रेष्ठ, उत्तम वक्ता दिलीप। वदतां धातु वद् शतृ, षष्ठी बहुवचन। 'यतश्च स निर्धारणम्' सूत्र से षष्ठी का प्रयोग हुआ है।